Q. वैयक्तिक भिन्नता के कारणों का वर्णन करें ?

वैयक्तिक विभिन्नता के कारण

Course of Individual Differences :-

मनोविज्ञान के आधार पर व्यक्तिगत भिन्नता के निम्नलिखित कारण है।

1 वंश - परंपरा (Heredity) :-

हम सभी का जीवन एक ही प्रकार से शुरु होता है। फिर भी जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं उसमें अंतर आ जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि सभी लोगों की वंश - परंपरा भिन्न - भिन्न होती है। वंश परंपरा में सभी ~~पैत्रीक~~ पित्रैक सम्मिलित रहते हैं, जो एक बालक को उसके माता - पिता के द्वारा गर्भधारण के समय प्राप्त होते हैं। वंश - परंपरा द्वारा शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के गुणों का हस्तांतरण होता है। वंशानुक्रम के प्रभाव से ही कोई कुशाग्र बुद्धि या सामान्य बुद्धि का होता है। कई बालक वंश - परंपरा के कारण गूंगे या बहरे होते हैं।

2. वातावरण (Environment) :-

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्तिगत भिन्नताओं की दृष्टि से वातावरण का भी स्थान काफी महत्वपूर्ण है। वातावरण में वे सभी बातें आ जाती हैं, जिनके प्रति व्यक्ति जन्मकाल से लेकर मृत्यु पर्यंत अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है। जैसे → जलवायु, भोजन आदि।

Scanned with CamScanner

बच्चे जिस प्रकार के सामाजिक वातावरण में रहता है उसके अनुसार उसका व्यवहार, रहन-सहन आचार-विचार आदि होते है इसलिए भिन्न-भिन्न सामाजिक परिवेशों में रहने वाले व्यक्तियों में भिन्नताओं का होना स्वाभाविक है। यही बाते भौतिक वातावरण पर भी लागू होती है। गर्म प्रदेशों में व्यक्ति छोटे निर्बल तथा आलसी होते हैं, जबकि ठंडे प्रदेशों के व्यक्ति कद से ऊँचे, बलवान और परिश्रम करने वाले होते हैं।

3. संस्कृति (culture) |→

बच्चों के व्यक्तिगत भेदो पर संस्कृति का भी प्रभाव पड़ता है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों से संबंधित व्यक्तियों की आदते, सामाजिक गुण, रहन-सहन, खान-पान आदि में अंतर पाया जाता है। संस्कृति के प्रभाव के कारण ही एक बंगाली लड़की और एक पंजाबी लड़की में भिन्नता होती है। इसी प्रकार जो विदेश में पैदा हुआ है वह भारतीय समाज के बच्चों से अलग होगा।

सांस्कृतिक भिन्नता के कारण ही ब्राह्मण में अध्ययन-अध्यापन का गुण और क्षत्रिय लोगों में युद्धप्रियता का गुण पाया जाता है। ऐसे ही एक वनवासी बच्चों और अन्य जातियों के बालकों में बहुत से अंतर पाये जाते है।

4. आयु और बौद्धिक विकास (Age and Intellectual development) →

विद्यालयों में भिन्न-भिन्न आयु के बच्चे पाये जाते हैं। जीवन के प्रारंभिक काल में कल्पना की मात्रा अधिक होती है। जैसे-जैसे आयु में वृद्धि होती जाती है, वैसे-वैसे बच्चों में यथार्थता आती जाती है।

कई मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि आयु की वृद्धि के साथ-साथ बौद्धिक क्षमता में कमी आती जाती है। ऐसा माना जाता है 60 वर्ष की आयु के बाद बौद्धिक न्यूनता आने लगती है और आयु के उत्तरोत्तर विकास से बौद्धिक न्यूनता में वृद्धि होती जाती है।

5. लिंग भेद (Sex Differences) →

विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के माध्यम से पाया गया है कि स्त्री और पुरुष में बहुत सी बातों में अंतर पाया जाता है। पुरुषों में वीरता और साहस की भावना महिलाओं से अधिक होती है। महिलाओं में स्नेह, दया, ममता, लज्जा आदि गुण पुरुषों से अधिक होते हैं।

सामान्य बुद्धि की दृष्टि से महिलायें अग्रणी होती हैं, विशेष क्षेत्रों में पुरुष आगे रहता है। दोनों में शारीरिक अंतर तो स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दर्शन और विज्ञान में महिलाओं से पुरुष आगे हैं जबकि स्मृति और भाषा संबंधी

Scanned with CamScanner

विकास में लड़कियाँ आगे हैं। ~~बच्चे~~ लड़कों पर निर्देश का प्रभाव कम होता है, परंतु लड़कियों पर इसका प्रभाव अधिक होता है। लड़कों की रुचि वीरता संबंधी कार्यों में होती है जबकि लड़कियाँ प्रेम-कथाओं और दिवास्वप्नों में ~~मस्त~~ रहती है।

Course - II Unit-3

Date
Page

Prश्न- 1

Q. पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु तथा कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में जेण्डर को कैसे प्रतिबिम्बित किया जाता है। इस संदर्भ में जेण्डर संबंधी विषय-वस्तु को स्पष्ट कीजिये।

Ans. पाठ्यवस्तु; पाठ्य-पुस्तक एवं जेण्डर का संबंध सामाजिक आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं पर आधारित है जो पाठ्यक्रम पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। समाज में उत्पन्न होने वाली अनेक प्रकार की जेण्डर संबंधी सामाजिक समस्याओं का समाधान शिक्षा के माध्यम से ही संपन्न होता है। इन समस्याओं के समाधान के लिये जो उपाय किये जाते हैं उन्हें पाठ्यक्रम का भाग बना दिया जाता है, जिससे उन समस्याओं का समाधान सरल रूप से हो जाता है। जैसे - समाज में दहेज प्रथा एवं बाल-विवाह की व्यवस्था को समाप्त करने के लिये पाठ्य पुस्तकों में कहानियों एवं निबंधों का समावेश किया जाता है। इससे इस व्यवस्था का विरोध होता है। इस प्रकार प्रत्येक छात्र बाल्यकाल से ही इन प्रथाओं को अनुचित मानता है तथा युवा होकर इनका विरोध करता है। इससे धीरे-धीरे इस प्रकार की समस्याओं का समाधान संभव हो जाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यचर्या विषय-वस्तु तथा कक्षागत छात्र-शिक्षक अंतःक्रिया को ~~निम्नांकित~~ आधारित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

1. अंधविश्वासों के उन्मूलन का विश्लेषण

समाज में जेण्डर संबंधी अनेक अंधविश्वास प्रचलित है। जिसके कारण सामाजिक जीवन पूर्णतः संघर्षपूर्ण रहता है। समाज में महिला पुरुषों के बीच असमानता बढ़ती है। जैसे - छोटी सी उम्र में ही बालिकाओं का विवाह कर देना एक परंपरा मानी जाती है परंतु पाठ्य-पुस्तकों में बाल-विवाह के प्रति दुष्प्रभावों का उल्लेख रहता है। तो समाज में इस प्रकार के अंधविश्वासों के प्रति जागरूकता फैलती है। इस प्रकार की घटनाओं को कहानियों एवं निबंधों के माध्यम से पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है। इस तरह से पाठ्यक्रम के माध्यम से जेण्डर संबंधी समस्याओं का समाधान संभव हो पाता है,

2. सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन :-

समाज में अनेक प्रकार की जेण्डर संबंधी कुरीतियों का समावेश पाया जाता है। इन कुरीतियों का उन्मूलन शिक्षा के माध्यम से संभव होता है। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के उपायों को पाठ्यक्रम में समावेश कर दिया जाता है। इससे प्राथमिक स्तर से ही छात्रों में सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार एक ओर से

पाठ्यक्रम का विकास करते हैं तथा दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं।

3. सांस्कृतिक विकास संबंधी समस्याओं का समाधान →

सामान्य रूप से समाज में अनेक सांस्कृतिक तत्वों एवं परंपराओं के विकास की समस्या बनी रहती है क्योंकि अपने निजी स्वार्थों के वशीभूत होकर अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को भूल जाते हैं। जैसे → पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में आकर बालिकायें अधिक खुलेपन के साथ अपनाने लगती हैं। पाठ्यक्रम में संस्कृति के संरक्षण के लिये विषय सामग्री का समावेश करके सांस्कृतिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। इसको समाधान के लिये पाठ्य-पुस्तकों में जोड़कर के स्व द्वारा सांस्कृतिक विकास की बाधाओं को समाप्त कर दिया जाता है।

4. सामाजिक गुणों के विकास की समस्या →

वर्तमान समय में समाज के सामाजिक गुणों का पतन होता जा रहा है। क्योंकि अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए समाज का अहित करने से नहीं चूकता है। इस प्रकार की समस्या के समाधान के लिये पाठ्यक्रम को प्रमुख उपाय के रूप में कार्य करता है क्योंकि पाठ्यक्रम में

त्याग, सहयोग, त्याग जैसे सामाजिक गुणों के विकास से संबंधित सामग्री का समावेश कर दिया जाता है। इससे छात्र प्रारंभ से ही गुणों को विकसित करने लगता है।

5. सामाजिक परिवर्तन संबंधी समस्याओं का समाधान

सामाजिक परिवर्तन की अनेक प्रकार की समस्यायें होती है जो समाज में आधुनिकता के समावेश को रोकती है जबकि ~~पाठ्यक~~ सामाजिक विकास में स्वस्थ एवं आधुनिक तत्वों का समावेश आवश्यक होता है। पाठ्यक्रम के सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिक तत्वों के विकास संबंधी उपायों का समावेश कर दिया जाता है। इस प्रकार छात्र प्रारंभिक स्तर से ही इन आधुनिकता एवं सामाजिक परिवर्तन के महत्व को समझते हुए स्वीकार करने में प्रेरित हो जाता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम का विकास होता है तथा सामाजिक परिवर्तन संबंधी समस्याओं का समाधान होता है।

6. सामाजिक अन्याय के उन्मूलन के लिए

वर्तमान समय में समाज में सामाजिक अन्याय के उन्मूलन के लिये पाठ्यक्रम के माध्यम से परिवर्तन का प्रयास किया जाता है। पाठ्यक्रम को सशक्त साधन के रूप में जाना जाता है क्योंकि शिक्षा प्राप्त करने से व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन होता रहता है।

Scanned with CamScanner